Read India
An imprint of Pratham Books

कौए के रिश्तेदार

वैंकटरमन गौड़ा
पद्मनाभ

Original Story (*Kannada*) Kaage Balagava Kareyithu by Venkatramana Gowda
© Pratham Books, 2004

Second Hindi Edition: 2009

Illustrations & Design: Padmanabh
Hindi Translation: K. Vijaya

ISBN : 81-8263-129-7

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526 and New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Pratham Books, New Delhi

Printed by: Pentaplus Printers Pvt. Ltd., Bangalore

Published by:
Pratham Books | www.prathambooks.org

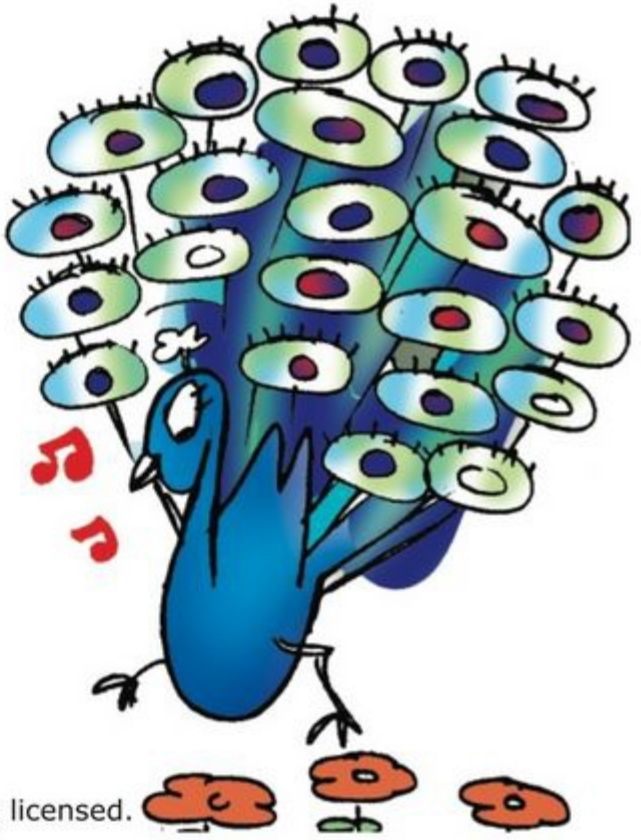

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

कौए के रिश्तेदार

लेखन : वैंकटरमन गौड़ा
चित्रांकन : पद्मनाभ
हिन्दी अनुवाद : के. विजया

यह पुस्तक

_____

_____

_____

की है।

रोज़ की तरह एक और सुबह हुई। कौआ चुपचाप अपने घोंसले में बैठा था। एक दो बार काँव-काँव बोला फिर बोर होकर चुपचाप बैठ गया। ठीक उसी समय कोयल की मीठी कुहू-कुहू सुनाई दी।

कोयल की आवाज़ कौए को बहुत अच्छी लगी। कोयल कौए से अच्छा गा रही है यह सुनकर कौए को कुछ जलन भी महसूस हुई। कौए ने निश्चय किया कि कुछ भी हो, वह कोयल की तरह ही गाना सीखेगा। कौए ने सोचा कि कोयल से ईर्ष्या करने के बदले उसी से गाना सीखना बेहतर होगा।

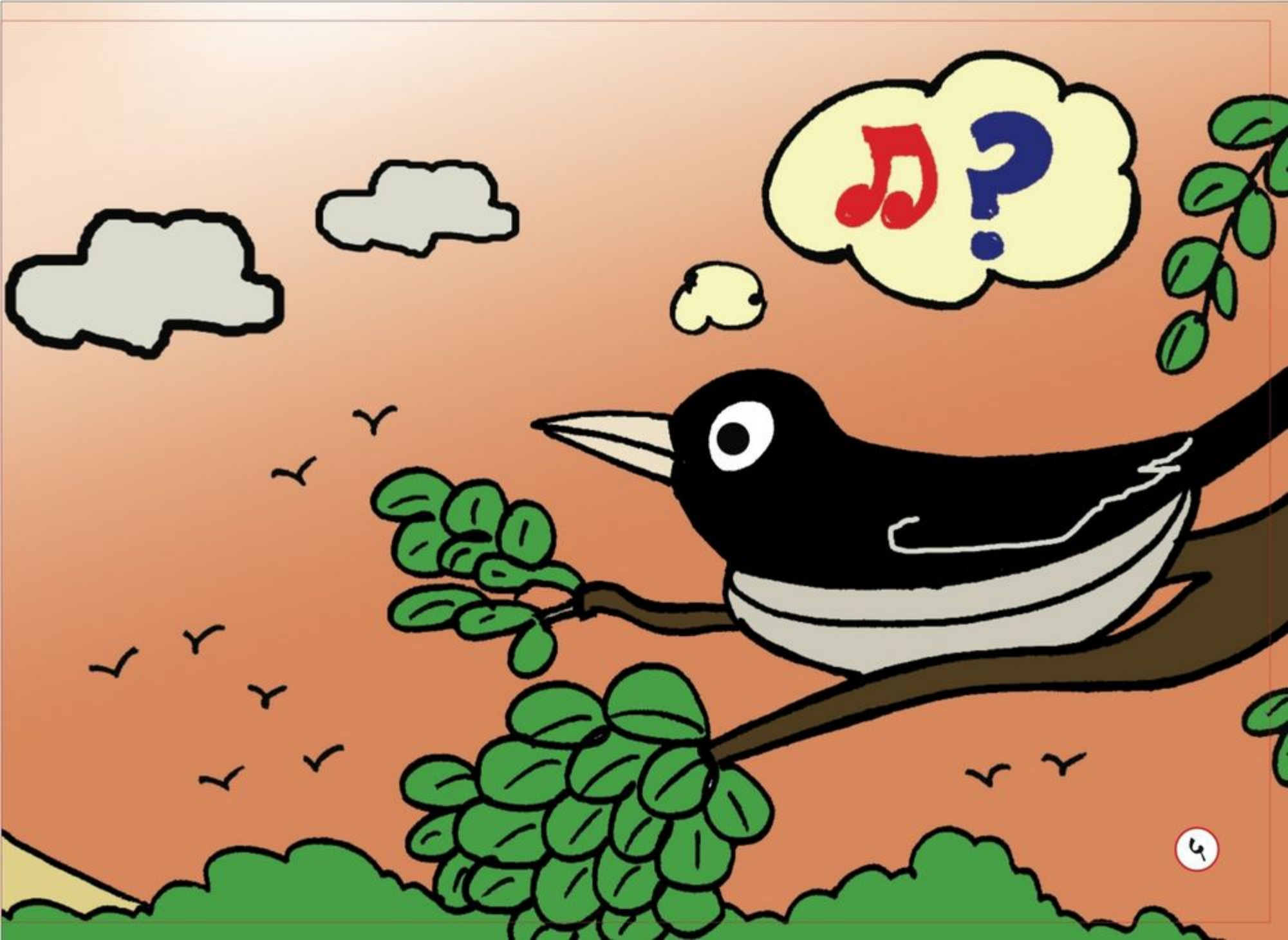

इस निश्चय के बाद कौआ कोयल को ढूँढने निकला। कोयल ने कौए को कुछ शक की निगाह से देखा लेकिन कौए ने बहुत सम्मान के साथ कोयल से बात की। उसने पूछा, ''क्या आप मुझे गाना सिखाएँगी?'' कोयल मान गई। लेकिन उसने यह शर्त रखी, ''सुबह जल्दी उठकर आना होगा।'' कौआ मान गया। यह निश्चित हुआ कि अगले दिन से पाठ शुरू होगा।

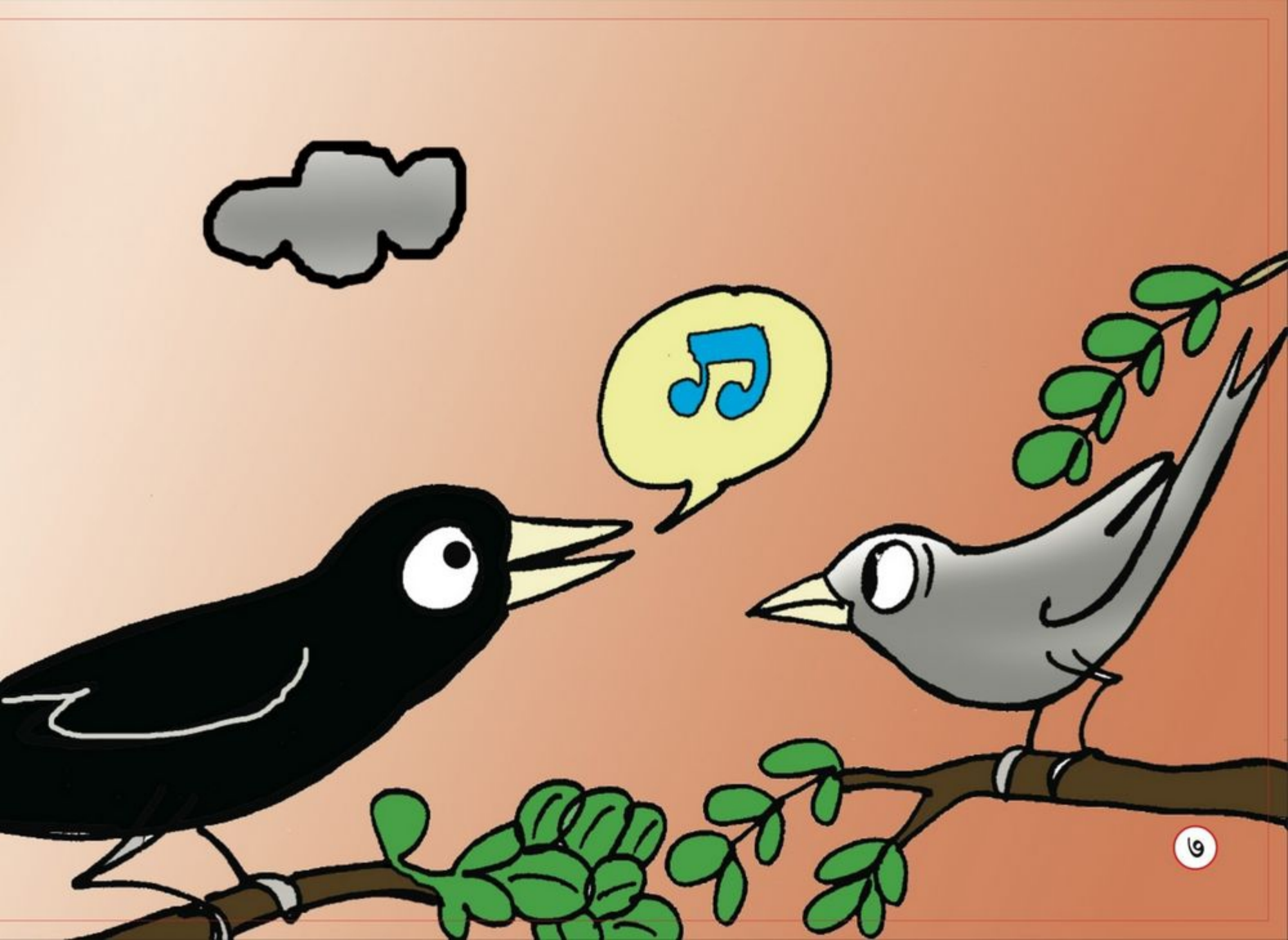

कौए को रोज़ देर से उठने की आदत थी लेकिन
कल से ऐसा नहीं हो सकता था। इसीलिए वह
सोने से पहले घड़ी में अलार्म लगाकर सोया।
जैसे ही अलार्म बजा उसकी नींद खुल गई।
अलसाई उनींदी आँखें लिये जल्दी-जल्दी तैयार
होकर कोयल के पास पहुँचा।

कोयल तो पहले से ही तैयार बैठी थी। कौए के आते ही संगीत पाठ आरंभ हो गया। कोयल के बार-बार कुहू-कुहू सिखाने पर भी कौआ काँव-काँव ही करता रहा। आखिरकार कोयल को गुस्सा आ गया।

''तुम्हें गाना सिखाना मेरे बस की बात नहीं,''
यह कहकर कोयल चली गयी।

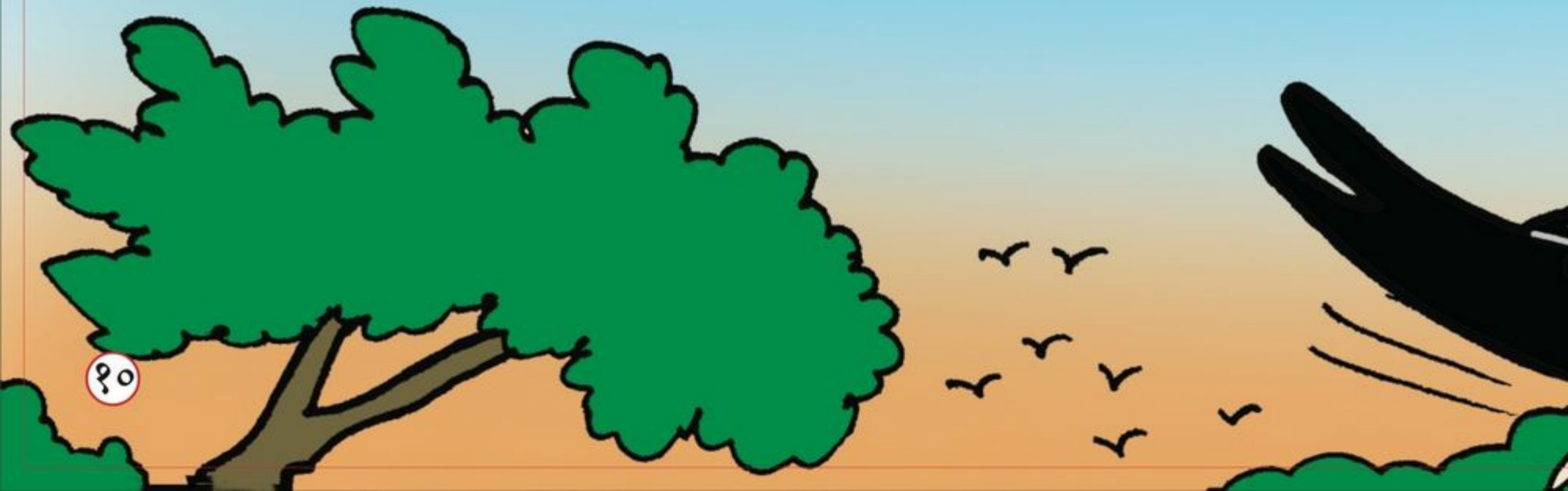

कौआ बहुत दुखी हुआ। चेहरे पर उदासी लिए
घर वापस आ गया।

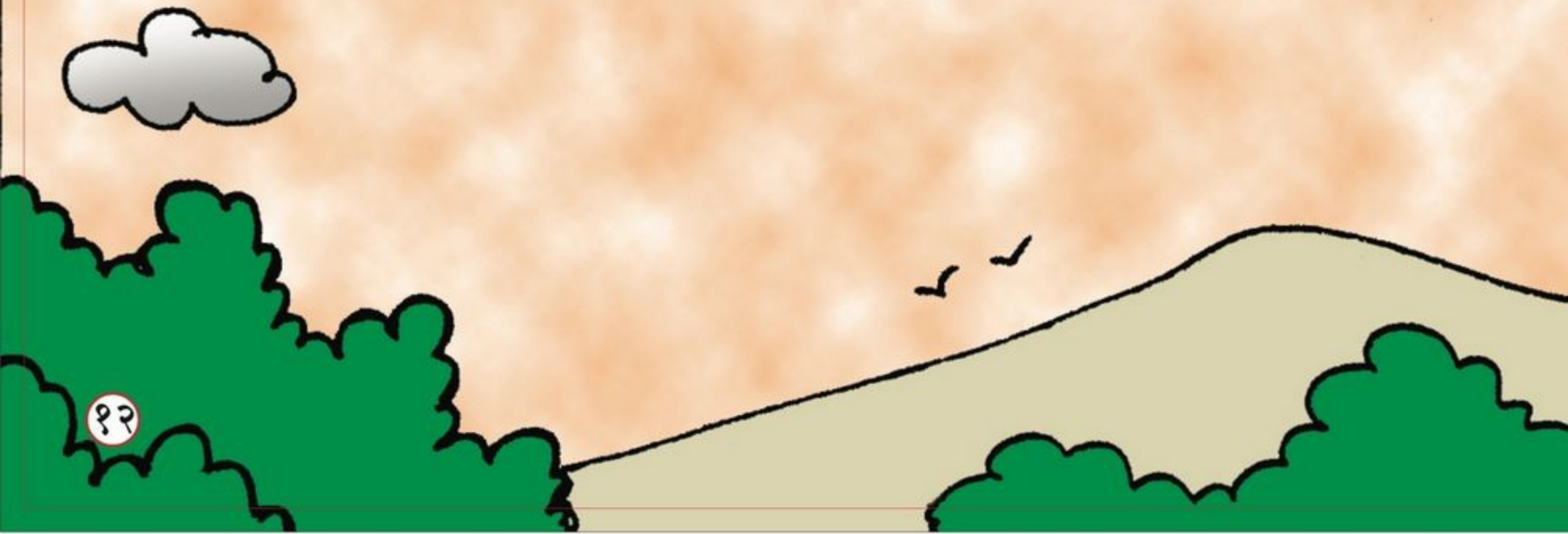

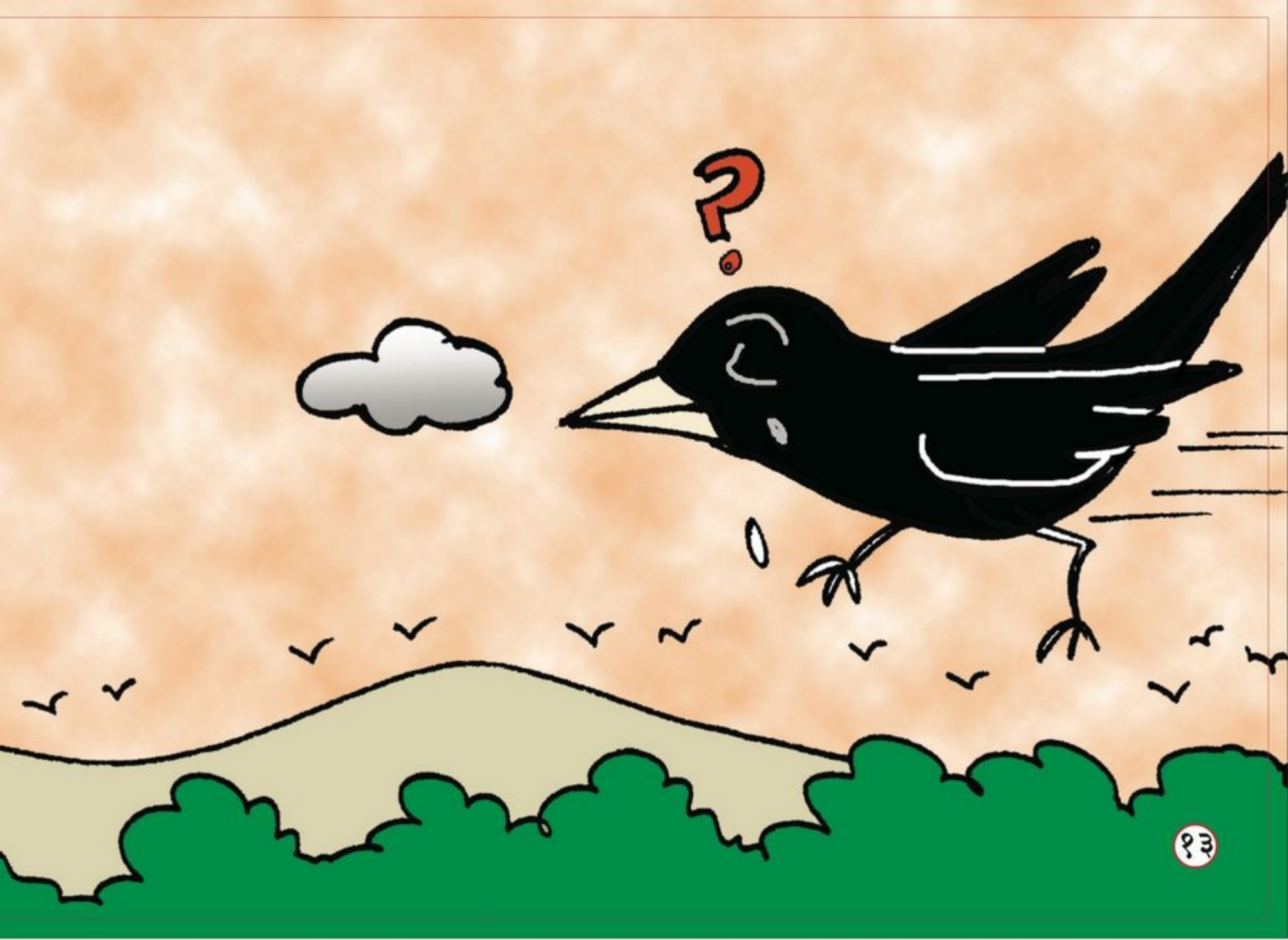

कुछ दिन बीत गये। एक दिन आसमान में बादल छाये। धीमी-धीमी, ठंडी हवा चली और बूँदा-बाँदी शुरू हो गई। कौआ घर पर ही बैठा रहा। तब कुछ दूर मोर का नाच दिखाई दिया। गाना तो सीख न सका कौए को लगा कि मोर से नाच ही सीख लिया जाये।

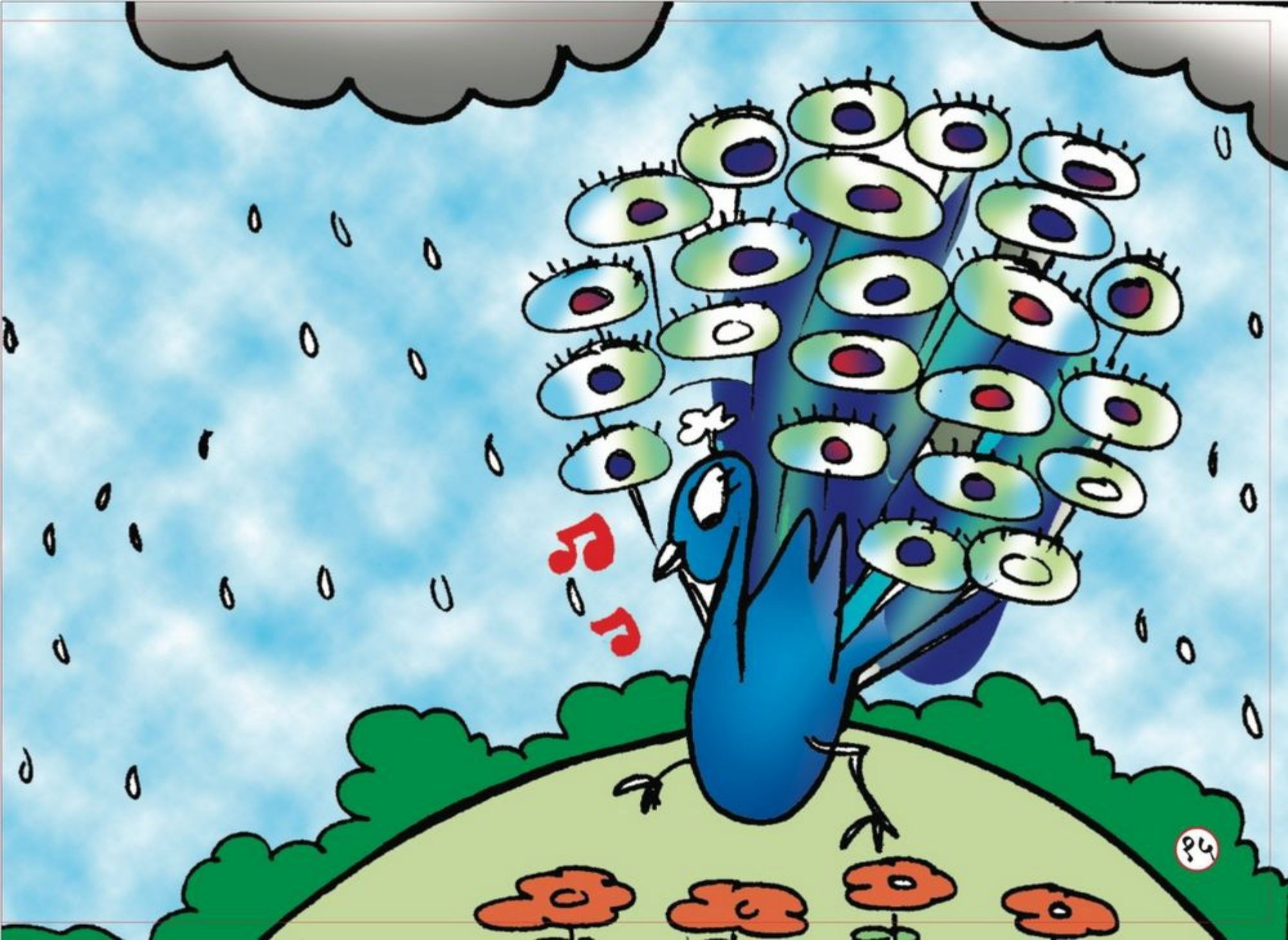

मोर के पास जाकर पूछा कि क्या मुझे नाच सिखाओगे?
मोर ने कहा, ''ठीक है। मेरे जैसे ही नाचो।''
कौए ने अपने पर खोले, पाँव थिरकाये।
मोर ने फिर नाच कर दिखाया कि वैसे नहीं ऐसे।
कौए ने फिर पाँव थिरकाये। ''ऐसे नहीं'', कहकर
मोर ने फिर से नाच कर दिखाया। फिर भी कौआ
उल्टे-सीधे पैर मारता रहा। आखिरकार मोर गुस्से से
चीखा, ''तुम नाच नहीं सीख सकते। जाओ।''

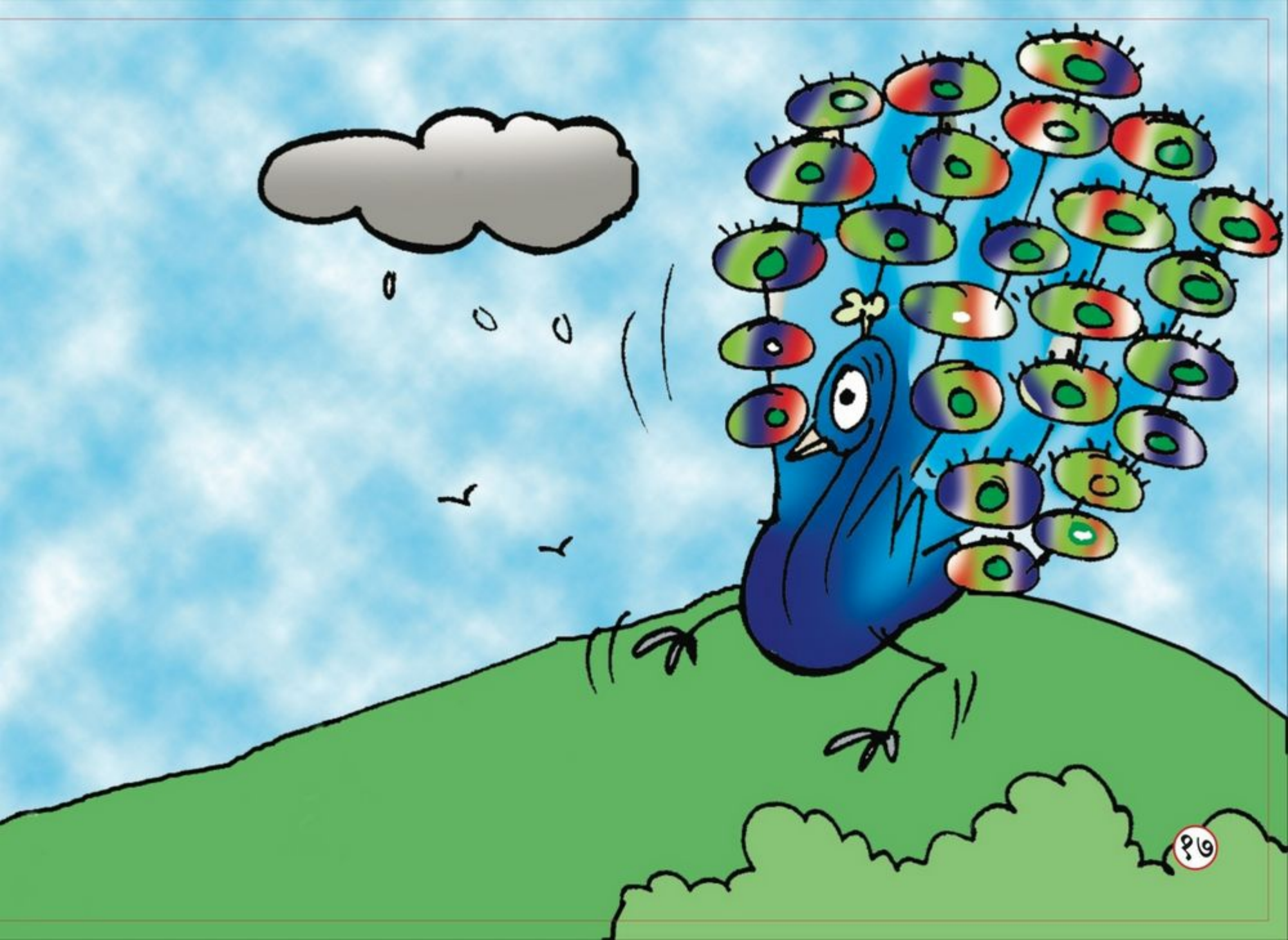

कौआ उदास हुआ कि न तो वह गा सका, न ही नाच सीख सका। फिर कौए को लगा कि चलो बढ़िया घोंसला बनाना ही सीख लिया जाये। गौरैया के पास जाकर पूछा, ''आप अपने जैसे घोंसला मुझे बनाना सिखाएँगी क्या?'' गौरैया ने साफ़ इन्कार कर दिया। उसने कहा, ''तुम में मेरे जैसे घोंसला बनाने की लगन नहीं है।''

एक बार फिर कौए को बहुत निराशा हुई। घर आकर परेशान सा बैठ गया। तभी नीचे के घर में उसे बर्तन माँजने के स्थान पर थोड़ी सी जूठन पड़ी दिखाई दी। वह तुरंत वहाँ जाकर काँव-काँव करके अपने रिश्तेदारों को बुलाने लगा। सभी रिश्तेदार आ गये। सभी में खाना बाँटकर कौए ने खुद भी खाया।

कौए के मन में एक विचार कौंधा। भले ही मैं गा नहीं सकता, नाच भी नहीं सकता। पर और कौन ऐसा है जो थोड़ा-सा खाना सारे परिवार में बाँट कर खाता है? चाहे वह कोयल हो, मोर हो या गौरैया, वे भोजन बाँट कर नहीं खाते। लेकिन मैंने कभी भी परिवार वालों में बिना बाँटे भोजन नहीं किया। ऐसा सोचते ही कौए में स्वाभिमान जागा। उसी खुशी में वह काँव-काँव करने लगा।

इस चित्र में रंग भरो।

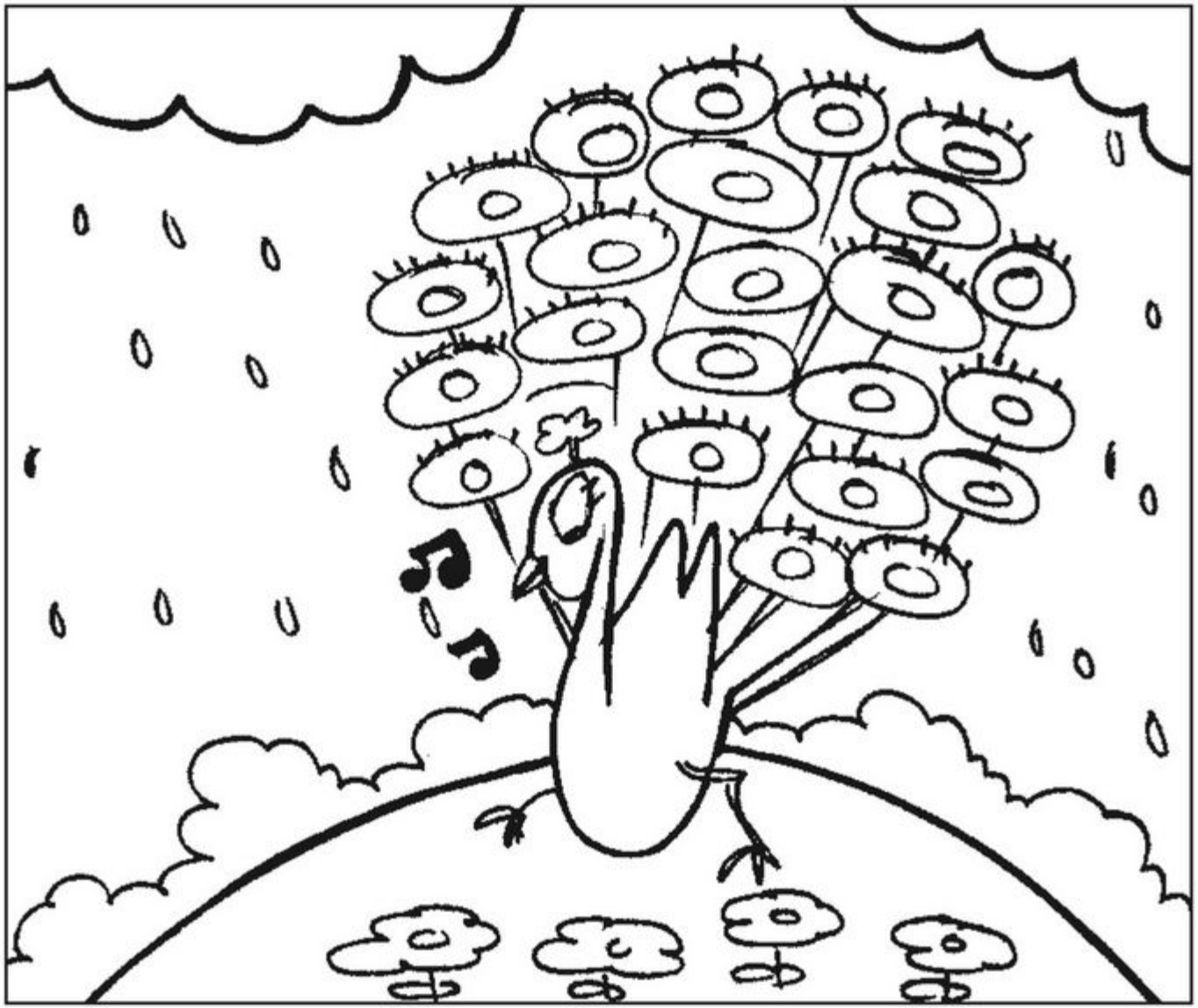

मेरा नाम अंजली है और खेल में सबसे आगे रहती हूँ। खेलने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। कॉमिक की किताबें मुझे अच्छी लगती हैं।
यह किताब खरीदने के लिये शुक्रिया। आपने यह किताब खरीदी तो मेरे पुस्तकालय में और भी बहुत सी किताबें आयेंगी जिन्हें मैं और मेरे दोस्त पढ़ सकेंगे।

वेंकटरमण गौड़ा ने कन्नड़ में उच्च शिक्षा प्राप्त करी है और वे एक वरिष्ठ पत्रकार हैं। उन्होंने उदयवाणी व विजय कर्नाटक में काम किया है और कुछ समय तक अपनी मासिक पत्रिका का सम्पादन किया। उत्तर कन्नड़ में हलक्की जनजाति के वेंकटरमण अपनी कहानियों व कविताओं में लोक शैली के लिये जाने जाते हैं। वे हैदराबाद में एक टेलिविज़न चैनल में कार्यरत हैं।

पद्मनाभ एक चित्रकार हैं जिन्होंने कर्नाटक के कई समाचार पत्रों में काम किया है।

कौआ खूबसूरत नहीं है। ना कोयल के जैसी मीठी आवाज़, ना मोर जैसी कला है उसके पास। पर उसमें एक ऐसा गुण है जिससे हम सब सीख ले सकते हैं। किताब पढ़िये और ढूँढ निकालिये।

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें

नौका विहार ● मछली ने समाचार सुने ● गौरैया और अमरूद
रंग बिरंगी सुंदर मछली ● राजू और तरकारी ● कुहू–कुहू कोयल
कछुआ और खरगोश ● स्वाद अनार का ● बुलबुलों वाला फेनीला दूध

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये **www.prathambooks.org** पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा संस्था है।

ISBN 818263129-7

9788182631298

Age Group: 7-10 years
Kauve Ke Rishtedar (Hindi)
MRP: Rs. 20.00